IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बैगा जनजाति को उपलब्ध पेयजल सुविधा का अध्ययनः कबीरधाम जिला के बोडला विकासखंण्ड ग्राम बेलापानी के विशेष सन्दर्भ में

मुकेश सिंह एवं डॉ. प्रीति मिश्रा

1. शोधार्थी – समाजशास्त्र विभाग, शास. जे. यो. छ.ग. महा. रायपुर (छ.ग.)
2. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग शास. जे. यो. महा. रायपुर (छ.ग.)

सारांश – बैगा जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति में से एक है जो कि सामान्यतः मंडला, ढिंडोरी, कवर्धा, मुंगेली, बिलासपुर क्षेत्र में पाए जाते है। मनुष्य की उत्पत्ति के साथ–साथ उनके विकास के लिए मुख्य आधार जल को माना जाता है, मनुष्य के स्वस्थ्य होने से जीवन स्वस्थ माना जाता है और स्वस्थ शरीर में स्वस्थ समाज का निर्माण होता है और इसके लिए शुद्ध पेयजल की आवश्यकता होती है ओर इसी पेयजल से मनुष्य का जीवन चलता है। मनुष्य की स्वस्थ रहना या होना उनके दैनिक दिनचर्या पर निर्भर करता है और वह पीने की वापी के ऊपर निर्भर रहता है। यह अध्ययन बैगा जनजाति को उपलब्ध पेयजल कि स्थिति पर आधारित है। मानव जगत में यह जनजाति की जनसंख्या काफी घट रही है जिस कारण से इन्हें विलुप्त जनजाति की सूची में रखा गया है और इनको बढ़ाने या बचाने के लिए सरकार के द्वारा अनेक प्रकार की योजनाओं से प्रोतसाहित किया जा रहा है ताकि इनके लिए सरकार के द्वारा अनेक प्रकार की योजनाएं पहुंच पाए और उनका सदुपयोग कर जीवन की दशा में बदलाव लाया जा सके। राज्य में विशेष पिछड़ी जनजाति की श्रेणी में रखा गया है ताकि इनके तक सरकार की सभी तरह की योजनाएं पहुंच पाए और उनका सदुपयोग कर जीवन की दशा में बदलाव लाया जा सके। राज्य में विशेष पिछड़ी जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। ताकि उनके उत्थान के लिए लगातार कार्य किया जा सके, इन जातियों में बैगा अनुसूचित जनजाति यह आधुनिक सुख–सुविधाओं से दूर घोर जंगल में निवास करते है, जहां मूलभूत सुख सविधाओं की कमी पाई जाती है और बिना सुख सुविधा के जीवन यापन करते हैं, जिसमें मुख्यतः पेयजल की सुविधा महत्वपूर्ण है। यह जनजाति छतीसगढ़ राज्य के बकीरधाम जिला के मैकल पर्वत श्रेणी में पाए जाते है और यह दूर जंगल में निवास करते है। यह अध्ययन कबीरधाम जिला के बैगा जनजाति पर आधारित है, इस अध्ययन हेतु कबीरधाम जिला के बैगा बाहुलय ग्राम बेलापानी का अध्ययन किया गया है इस अध्ययन हेतु 50 बैगा परिवारों में उपलब्ध पेयजल की सुविधा की स्थिति को जानने की कोशिश की गई है। प्रस्तुत अध्ययन की प्राप्त जानकारी के अनुसार से यह ज्ञात होता है कि सरकारी प्रयासों के बावजूद आज बैगा बाहुल्य ग्राम में पेयजल कि सुविधा की स्थिति पर काफी पिछड़े हुए पाए गए हैं ओर यह पेयजल कि सुविधा एवं स्वास्थ्यगत स्थिति को सुधारने में असफल हो रही है।

महत्वपूर्ण शब्द – बैगा जनजाति, पेयजल,स्वास्थ्य,

प्रस्तावना – बैगा जनजाति भारत सरकार द्वारा घोषित 72 विलुप्त जनजाति में से एक है जो बैगा जनजाति के नाम से जाना जाता है। जिसे राष्ट्रपति का दत्तक पुत्र माना जाता है जिनकी जीवन पद्धति, संस्कार, कला, परंपरा एवं नियम अलग–अलग होते हैं। बैगा अनुसूचित जनजाति के परंपरा एवं स्वास्थ्यगत, पेयजल कि स्थिति से अवगत हुये हैं। तथा

जनजाति अपने आवश्यकता की पूर्ति के लिए जोखिम भरा कार्य करते है। सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की पेयजल समबन्धी योजना का संचालन किए जा रहे हैं ताकि स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार हो सके और जीवन को स्वसथ पूर्वक जी सके परंतु इसके बावजूद कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखता है। बैगा जनजाति मध्य क्षेत्र की एक महतवपूर्ण जनजाति है छततीसगढ़ में इनकी जनसंख्या कम होने के कारण तथा आधुनिक समाज से दूर होने के कारण भारत सरकार ने इसे विशेष पिछड़ी जनजाति की समूह में शामिल कर चिन्हित किया है। जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ में भी इनकी बचाओ संरक्षण की आवश्यकता महसूश की गई और मध्य प्रदेश से अलग होते ही छत्तीसगढ़ राज्य में इन्हें विशेष पिछड़ी जनजाति में शामिल कर स्थान दिया गया है। सामजशास्त्री गीलिन ने अपनी पुस्तक "Cultural Sociology" में कहां है स्थानी आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहता है एक सामान्य भाषा बोलता है एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता है एक जनजाति है।

शोध अध्ययनों की समीक्षा–

बैगा जनजाति को लकर भारत में कई प्रकार के शोध किए जा चुके है साथ ही शासन द्वारा समय अनुसार तरह तरह की योजनाओं कर अध्ययन करते रहे है जिससे अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है साथ ही शोध संबंधी अनेक किताब शोधपत्र शोध कार्य से अनेक जानकारी प्राप्त होती है जिसेा वर्णन किया गया है साथ ही समय–समय पर अनेक अध्ययन के बाद भी विशेष परिवर्तन नहीं आ रही है।

रसेल एवं हीरालाल (1916) ने ''ट्राइबल एंड कास्ट्स ऑफ द सेन्ट्रल प्रोविंस ऑफ इंडिया'' में बैगा जनजाति के बारे में विस्तार से वर्णन किया है। जिनके अनुसार बैगा जनजाति आदिम समूह की जनजाति है, जो मध्य भारत के क्षेत्र मंडला, डिंडोरी, कवर्धा, बिलासपुर के क्षेत्र में पाये जाते है। जहां पहुंचने के लिए रास्ते नहीं होते है पगडण्डी का सहारा लिया जाता है।

बेरियर एल्विन (1939) ''द बैगा'' में विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा का विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है द बैगा में बैगा जनजाति के संपूर्ण जीवन काल एवं प्रत्येक अवस्था का विस्तार पूर्वक परंपरा एवं संस्कृति का विशेष वर्णन प्राप्त होता है जिसमें प्रत्येक स्तर के पहुलओं पर प्रकाश डाला गया है। जिसमें बैगा जनजाति के स्वास्थ्य स्तर के बारे में जानकारी प्राप्त होती है और जानकारी प्राप्त होती है कि परंपरागत दवाइयों जड़ी बूटियों का उपयोग कब और किस अवस्था में करते है बैगा जनजाति अपने आपको दूर जंगल में रहना पसंद करते है।

बसु (1992) यह अध्ययन में बैगा जनजाति के महिलाओं कि स्वास्थ्य स्थिति का अध्ययन किया है जिसमें जनजाति समाज देखभाल तथा सांस्कृतिक स्थिति का शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जो कि स्वास्थ्य और जीवन कि विशेष स्थिति को बढ़ाने में सहायक होते है।

कोठारी सी आर. रिसर्च मेथडोलॉजी (2004) न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन न्यू दिल्ली इस पुस्तक के माध्यम से शोध के विभिन्न आयाम एवं विषय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है जिससे शोध कार्य को सुगम बनाया जा सकता है।

कुमार दिनेश एवं अजय (2010) ने स्वस्थ्य सेवाओं एवं जागरूकता के सम्बन्ध में अध्ययन किया है, यह अध्ययन मध्यप्रदेश के डिंडोरी जिले में किया है। इस अध्ययन का उदेश्य माताओं की स्वास्थ्य सुरक्षा की जागरूकता के संबध में है। विशेषता यह अध्ययन गर्भावस्था के समय का है। इस अध्ययन हेतु 460 महिलाओं का साक्षात्कार के लिए चयन किया गया है, इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि बैगा जनजाति वर्ग की माताएं अपने स्वास्थ्य सुरक्षा पर विशेष ध्यान नहीं देती है। इस वर्ग में जागरूकता की कमी पायी गई है, इस जनजाति में 10 प्रतिशत माताएं ही साक्षर है। जिसमें स्वास्थ्य परीक्षण के बारे में जानकारी है, 90 प्रतिशत माताएं जो साक्षर नहीं है, संस्थागत प्रसव पर 10 प्रतिशत लोग ही ध्यान देती है। इस वर्ग विशेष को स्वास्थ्य सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है ,स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान न देने से विभिन्न प्रकार के समस्या आती है, तथा समय पर उचित उपचार न होने से बड़ी दुर्घटना भी हो जाती है और जनजाति वर्ग में साक्षरता की कमी होन के कारण ही स्वास्थ्य सुरक्षा पर कम ध्यान दिया जाता है। साक्षरता दर में वृद्धि होन से स्वास्थ्य सुरक्षा पर संभवतः सुधार होजाएगी, शासन की योजनाओं में एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को इस जनजाति वर्ग की माताओं को जागरूकता लाने

के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, ताकि गर्भावस्था के समय मासताएं अपने स्वारूथ्य का देखभाल स्वयं ही कर पाएं एवं स्वस्थ हो।

बाबूराम (2016) ने विशेष पिछड़ी जनजाति का अध्ध्यन किया है, जिसमें उन्होने पाया कि बैगा जनजाति की संस्कृति एवंसभ्यता अपना एक विशेष अस्तितव होता है, जनजाति विशेष का अपना संस्कृति होता है और इनका उपचार अपना अलग होता है, वह जड़ी बुटियों का उपयोग करते है , इनका उपयोग अपने स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए करते हैं तथा बैगा जनजाति जो है अपने रीति रिवाज एवं अंधविश्वास को ज्यादा मानते है, अर्थात पुराने रीति रिवाज का ज्यादा उपयोग करते है। इस सुमुदाय के हिसाब से अपना अस्तितव पंच एवं पंचायत होती है, इन्हीं के आधार पर निर्णय लेते हैं, और जल जमीन और जंगल को लेकर मांग करते रहते है तथा उसका संरक्षण के लिए आवाज उठाते है। ताकि जंगल सुरक्षित हाने से वह अपने आप को सुरक्षिात समझते हैं, इसलिए जंगल को सुरक्षित रखने के लिए संभवतः प्रयास किया जाना चाहिए। इस अध्ययन पद्धति के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है, यह अध्ययन छत्तीयगढ़ के विशेष संदर्भ में है जो कि बैगा जनजाति के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया है।

अध्ययन का उदेश्य–

1. बैगा जनजाति को उपलब्ध पेयजल की सुविधा का अध्ययन।
2. बैगा जनजाति में पेयजल तथा स्वास्थ्य के संबंध का अध्ययन।
3. संचालित शासकीय योजनाओं के बारे में जानकारी।

शोध पद्धति एवं उत्तरदाताओं का चयन–

प्रस्तुत शोध छततीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिला के बोडला विकासखंण्ड के बैगा बाहुल्य ग्राम का चयन किया गया है। इस अध्ययन हेत बेलापानी ग्राम का चुनाव किया गया है यह ग्राम

आंकडो का संकलन एवं प्रविधि–

आंकडो का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्ययम से किया गया है अध्ययन जितने ही प्रमाणित होगें उतनी ही वैज्ञानिकता होगी तभी अनुसंधान की सत्यता तक पहुंची जा सकती है जो शोध प्रबंध अपनी मालिकता को वास्तव में यथार्थ रूप दे सके। कबीरधाम जिले की जनसंख्या 2011 के अनुसार 822526 है जिसमें 412058 पुरूष जनसंख्या है एवं 410468 महिलाओं की जनसंख्या है। कबीरधाम जिले की साक्षरता 60.85 प्रतिशत है। 2011 के जनगणना के अनुसार बैगा अनुसूचित जनजाति की कुल संख्या 89744 है जिले की लिंगानुपात 996 है।

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण–

प्रस्तुत अध्ययन के आंकड़ो का संकलन एवं अध्ययन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का उपकरण की सहायता से प्राथमिक आंकड़ो का संकलन किया गया है। ताकि जमीनी स्तर की सत्यता ज्ञात हो सके जिससे पूर्ण रूप से दशा एवं स्थिति की जानकारी प्राप्त हो अध्ययन की द्वितीयक आंकड़ो का संकलन हेतु अलग अलग शोध आलेख शुद्ध अध्ययन पत्र–पत्रिकाओं तथा शासकीय योजनाओं का प्रतिवेदन एवं सूचना तंत्र के माध्यम से आंकड़ो का संकलन किया गया है ताकि अध्ययन को पूर्णतः सारगर्भित रूप दिया जा सके, तथा इस ग्राम में रह कर अवलोकन कर तथ्य संकलन किये गए है।

पेयजल

बैगा जनजाति में पेयजल कि संकट काफी बड़ी है जनजाति समाज सूदूर जंगल में निवास करते है जहां सडक मार्ग की कमी होती है जिससे अनेक प्रकार कि समस्या का सामना करना पड़ता है, जनजाति समाज के निवास स्थान पर सातायात के साधन के पहुंच पाने से ओर असुविधा होती है जिससे शुद्ध पेयजल की उपलब्धता कि कमी होती है। इन्ही कारणों से बैगा जनजाति परिवार नदी, नाले, झिरिया इतयादि जगहों की पानी पीने के लिए मजबूर होते है, समयानुसार मौसम के अनुसार से गर्मी, बरसात के समय में भी पेयजल का अभाव होता है, इन्हीं कारणों से अनेक प्रकार के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या का सामना करते है।

उपलब्धता पेयजल के स्त्रोत–

बैगा जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति है यह जनजाति दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में रहते है जाहां पर पेयजल कि साधनों कि उपलब्धता अलग अलग होती है एवं पेयजल के साधनों का अभाव पाया जाता है। कई ऐसे ग्राम है जाहं पर पेयजल के लिए अनेक प्रकार के कठोर कार्य करना पड़ता है, काफी निचले स्तर पर पानी कि प्राप्ति होती है।

तालिका क्रमांक 1

उपलब्धता पेयजल के स्त्रोत

क्रमांक	उपलब्धता पेयजल के स्त्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सार्वजनिक हैंडपंप	21	46
2	सार्वजनिक कुआं	0	0
3	झिरिया /नदी	24	54
	योग	**45**	**100**

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 46 प्रतिशत उत्तरदाता सार्वजनिक हैंण्डपंप से पेयजल की प्राप्ति करते है तथा 54 प्रतिशत उत्तरदाता झिरिया से पानी की प्राप्ति करते है जिसका उपयोग पेयजल के रूप में करते है, गांव में सार्वजनिक कुएं का साधन नहीं है।

अध्ययन से जानकारी होता है कि पेयजल सबंधी कोई विशेष संसाधन नही है जो टिकाऊ हो और उसका उपयोग लम्बे समय तक किया जा सके। साथ ही हैण्ड पंप खराब होन से लम्बे समय तक कोई ध्यान नही देते है ऐसे स्थिति में सभी परिवार को नदी झिरिया पर निर्भर होना पड़ता है।

गांव में पेयजल समस्या–

बैगा जनजाति घोर जगंल में निवास करते है जिसके कारण जलस्तर काफी नीचे पाया जाता है एवं आवागमन की सुविधा ना होने से अनेक प्रकार की समस्या होती है जिसके कारण से जनजाति ग्राम में अनेक प्रकार कि समस्या होती है।

तालिका क्रमांक 2

गांव में पेयजल समस्या

क्रमांक	गंव में पेयजल समस्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	30	66
2	नहीं	15	34
	योग	**45**	**100**

अध्ययनगत ग्राम के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 66 प्रतिशत उत्तरउाता को ग्राम में पेयजल की समस्या का सामना करना पड़ता है, 34 प्रतिशत उत्तरदाता का कहना है कि पेयजल की समस्या नही होती है संसाधनों कि कमी है परंतु अपने अनुसार नदी नाले या झिरिया का पानी का सेवन कर लेते हैं इससे ज्ञात होता है कि जनजाति ग्राम में पेयजल कि सुविधा का अभाव है एवं समस्या है।

गांव में पेयजल कि समस्या के प्रकार–

स्वच्छ एवं पेयजल के अभाव में बैगा जनजाति कई प्रकार कि समस्या से ग्रसत है चाहे वह समस्या व्यक्तिगत हो या ग्राम की समस्या हो जिससे जनजाति समाज प्रभावित है।

तालिका क्रमांक 3

गांव में पेयजल कि समस्या के प्रकार

क्रमांक	गंव में पेयजल समस्या का प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1	स्वच्छ जल का अभाव	26	57
2	पेयजल लाने की समस्या	8	17
3	पेयजल रखने कि समस्या	11	24
	योग	**45**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 57 प्रतिशत उत्तरदाता को स्वच्छ पेयजल के अभाव में जीवन यापन कर रहें है। 17 प्रतिशत उत्तरदाता को पीने के लिए पानी लाने में समस्या हो रही है क्योंकि पीने का पानी दूर झिरिया से लाते है एवं आवागमन की सुविधा तथा पहाड़ी जंगल का मार्ग होन से समस्या हो रही है। 24 प्रतिशत उततरदाता के आसपास पेयजल की सुविधा है परंतु पेयजल रखने की सामग्री कि उपलब्धता न होन से असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। जिससे ज्ञात होता है कि अनेक प्रकार की समस्या विद्यमान है।

शासकीय योजना का पेयजल के लिए प्रयाश–

बैगा जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति में से एक है जिसके लिए सरकार के द्वारा अनेक प्रकार की योजनाओं का संचालन होता है एवं सरकार के द्वारा अनेक प्रकार से लाभ पहुंचाने का प्रयास किया जाता है परंतु उसके बाद भी हर जगह सुविधा कि कमी देखी जाती है।

तालिका क्रमांक 4

शासकीय योजना का पेयजल के लिये प्रयास

क्रमांक	शासकीय योजना का पेयजल के लिए प्रयास	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	15	33
2	नहीं	30	67
	योग	**45**	**100**

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है ग्राम में पेयजल के लिए शासकीय योजना के तहत प्रयास किया जाता है एवं 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना हे कि पेयजल के लिए शासकीय योजना के तहत प्रयास नहीं किए जाते जिसके परिणाम स्वरूप पेयजल के लिए अनेक प्रकार की समस्या होती है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकार के द्वारा अनेक प्रसास के बाद भी पेयजल कि समस्या है व्याप्त है।

गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पेयजल सम्बन्धी जागरूकता–

शासन द्वारा जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम हेतु अनेक प्रकार की प्रयास एवं राशियों का विभाजन करते है ताकि जनजाति क्षेत्र का विकास हो जिससे किसी भी प्रकार कि समस्या न हो। परंतु अध्ययन से ज्ञात होता है कि सरकारी प्रयसासों का जमीनी स्तर काफी है एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पेयजल संबंधी जागरूकता के लिए नही के बराबर कार्य करते है।

उपलब्धता पेयजल से स्वास्थ्य पर प्रभाव का होना–

अध्ययन से प्राप्त जानकारी के अनुसारबैगा जनजाति में शुद्ध पेयजल कि समस्या विछ्यमान है जिसके कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है, और इससे अनेक प्रकार कि बीमारी का सामना करना पड़ता है।

तालिका क्रमांक 5

उपलब्धता पेयजल से स्वास्थ्य पर प्रभाव का होना

क्रमांक	उपलब्धता पेयजल से स्वास्थ्य पर प्रभाव का होना	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	32	71
2	नहीं	13	29
	योग	**45**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 71 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि जो उपलब्धता है पेयजल उससे स्वास्थ्य पर प्रभाव होता है जिससे स्वास्थ्य स्तर में गिरावट आती है तथा 29 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है स्वास्थ्य में प्रभाव नही करता है इसके पीछे कई कारण हो सकते है जैसे आदत का होना, स्वास्थ्य का स्वीकार्य कर लेना। अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिक मात्रा में स्वास्थ्य स्तर पर नकारात्मक प्रभाव हो रहे है जो नुकसानदायक है।

गर्मी के मौसम में पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता–

बैगा जनजाति दूर जंगल में निवास करते है और गर्मी के मौसम में जल का स्तर काफी नीचे चली जाती है, नदी–नाले झिरिया सब सुख जाते है जिससे अनेक प्रकार की समस्या होती है जिससे पेयजल की समस्या हो जाती है और फिर पीने के पानी के लिए दूर–दूर तक जाना पड़ता है ताकि पेयजल की प्राति हो सके। अध्ययन से ज्ञात होता है कि पेयजल की समस्या बड़ी समस्या है जिससे अनेक प्रकार कि समस्या उत्पनन होती है जो जनजाति के लिए भयावह है। इसके लिए जनजाति नदी, झिरिया से अधिकातर पेयजल प्राप्त करते है।

निष्कर्ष एवं सुझााव–

बैगा जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति में से एक है वर्तमान समय में चारों ओर बहुमुखी विकास किये जा रहे है, आधुनिकता के इस युग में समय के अनुसार विकास हो रहे है, परंतु भारत गांवों का देश है जिससे जनजाति समाज घोर जंगल में विनास करते है, जहां पर इस अध्ययन से जानकारी प्राप्त होती है कि आज भी इतने प्रयाश के बाद भी जनजाति समाज तथा संसाधनों में पिछड़े हुए हैं जहां कि स्वास्थ्य स्थिति काफी नीचे स्तर का है शुद्ध पेयजल आसानी से प्राप्त नही होते है। बैगा जनजाति पेयजल के लिए ज्यादातर झिरिया नदी के सहारे है जिसके पानी का उपयोग पीने के लिए करते है जो पूर्णरूप से शुद्ध नहीं होते है। जनजाति समाज में जागरूकता कि कमी है तथा गैर सरकारी संस्थाएं भी जागरूकता सबंधी काय्र सही रूप में नहीं कर पा रहें है। शासन के इतने विकास के लिए बजट के बाद भी बैगा जनजाति आज भी पिछड़े हुए है इसके लिए शासन को कठोर नियम बनाकर कठोर कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि जनजाति समाज का उत्थान हो सके जो सुझााव के रूप में वर्णित है–

सुझाव –

यथास्थिति विश्लेषण के आधार पर यह सुझााव प्रस्तावित किया जा सकता है कि जनजाति समाज के लिए ऐसी योजना का निर्माण किया जाना चाहिए जिससे शुद्ध पेयजल आसानी से प्राप्त हो सके। जनजाति परिवार को स्वास्थ्य के लिए जागरूक किये जाने चाहिए ताकि पेयजल से क्या सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव होते है उनकी समझ हो सके। शासन को समय–समय पर सर्वे कर पेयजल कि उपलब्धता के संबंध में जानकारी हासिल किए जाये तथा मौसम के अनुसार जमीनी स्तर पर जानकारी एकत्र कर पेयजल कि सुविधा प्रदान किए जाने चाहिए। जनजाति ग्राम में समस्या को ध्यान में रखते हुए ग्राम पंचायत स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिये।

संदर्भ सूची–

1. एल्विन, वैरियर, (1939) ''द बैगा'' ज्ञान पब्लिकेशन, न्यू दिलली।

2. कोठारी सी.आर. रिसर्च मेथडोलॉजी (2004) न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन न्यू दिल्ली।
3. कुमार कुष्ण, तिवारी (2018) बैगा जनजाति के उत्पत्ति की अवधारणा, शोध प्रबंध जैन विश्वभारत संस्थान, राजस्थान।
4. श्रीवास्तव, ए.आर एन. (2004) जनजाति भारत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
5. बाबुराम (2016) बैगा जनजाति के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन छत्तीसगढ़।
6. कुमार दिनेश एवं अजय (2010) स्वास्थ्य सेवाओं एवं जागरूकता के सबंध में अध्ययन, मध्यप्रदेश।
7. कुजूर निस्तार (2011) आदिम जनजाति कोरवा, सिंघई पब्लिकेशन, रायपुर
8. http//google,rajyapal prativedan2016-17
9. शर्मा टी.डी. (2012) छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, छत्तीसगढ़
10. उपाध्याय, विजय शंकर (2010) जनजातीय विकास, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
11. रसेल, आर, वी हीरालाल, द ट्राइबल एंड कास्अ्स ऑफ द सेन्ट्रल प्रोविंस ऑफ इंडिया, वाल्यूम 2 लन्दल 1916 पृ. 1।